वेदिक देवता सूर्य और उनकी शक्ति

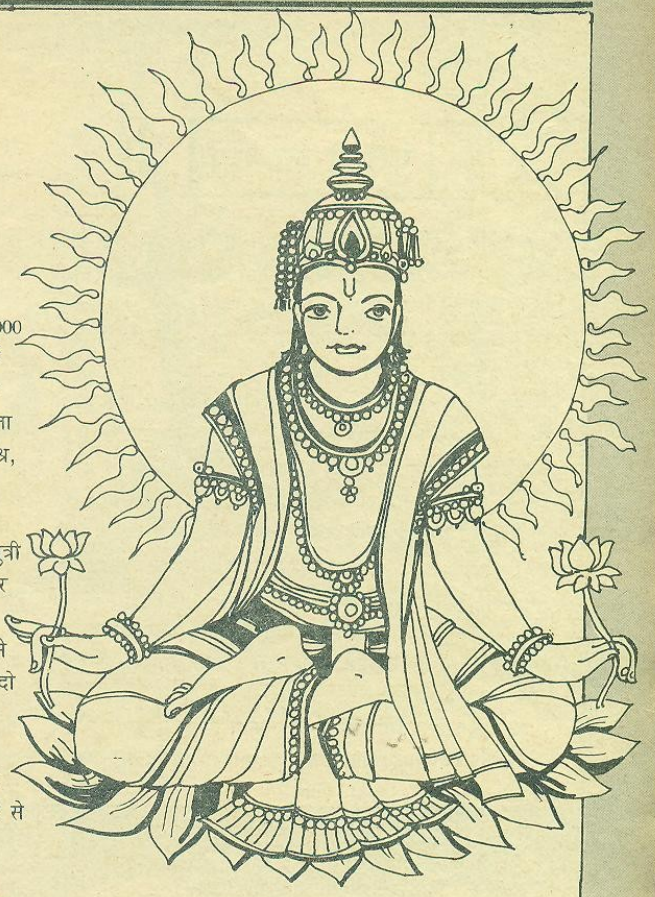

ऐतिहासिक दृष्टि से सूर्य उपासना नव प्रशस्त युग 8000-9000 ई० में भी प्रचलित थी। जैसे-जैसे मनुष्य सभ्य हुआ उसने सूर्य का महत्त्व समझा कि किस प्रकार उसके प्रकाश और उष्मा का सारा जीवन निर्भय करता है वह उसकी उपासना में तत्पर होता गया। उस उपासना की प्रेरणा। भारत से पश्चिम एशिया, मिश्र, रोमन और ग्रीश तक व्याप्त हो गई जिसके प्रमाण आज भी प्रचलित है।

मार्केण्य के अनुसार भगवान सूर्य का विवाह विस्वान् की पुत्री संज्ञा के साथ हुआ था किन्तु वह उसका तेज सह न सकी और उनके पास अपनी छाया छोड़कर पिता के पास लौट गई तब विश्वकर्मा ने सूर्य के तेज को थोड़ा कम किया जिससे संज्ञा उसे सहन कर सकी और छाया के अतिरिक्त रागी और प्रभा यह दो पत्नियां सूर्य की बतलायी गई हैं रागी से यम, यमुना और रेवन्तका एवं प्रभा से प्रभात का छाया से सावर्णी, शनी और तप्ती का जन्म हुआ, इसी प्रकार सूर्य द्वारा अन्य देवताओं एवं नवग्रहों का जन्म हुआ जिसकी कथा स्कन्द पुराण में विशेषतौर से है।

भविष्य पुराण और वरहा पुराण में लिखा है कि कृष्ण की पुत्री शाम्भ को कृष्टरोग होने पर सूर्य पूजा द्वारा ही आरोग्य का लाभ हुआ था। बाल्मीकि रामायण के अयोध्या कांड में उल्लेख है कि अगस्त ऋषि ने राम को यह परामर्श दिया कि वह सूर्य की स्थिति आदित्य हृदय नामक स्वत से करें तो उन्हें रावण पर विजय प्राप्त होगी। इससे स्पष्ट है कि भगवान सूर्य की उपासना प्राचीनकाल से चली आ रही है। उन्नाव (जिला दतिया), मथुरा, मन्दसौर, इन्दौर, बुलन्दशहर, आरा, बहराइंच, कोर्णाक आदि अनेक स्थानों में सूर्य के मंदिर हैं जिनका आज भी उतना ही महत्व है जितना महत्व वनवाते समय था। भगवान सूर्य की दो प्रकार की मूर्तियां पायी जाती हैं एक-में पहियों वाले रथ के साथ घोड़ों से जुड़ा हुआ, जोकि प्रकाश के प्रिज्म के सिद्धान्त के अनुसार सात घोड़े सात रंग का प्रतीक हैं जोकि गतिशील होने पर श्वेत रंग के प्रकाश के रूप में परिणीत हो जाता है। दूसरे-प्रकार के नंगे पांव कमल के पैर के ऊपर खड़े दिखायी देते है यहां उनका चेहरा ही बना होता है। सूर्य के प्रमुख ग्रंथ सौर संहिता, सम्राट हर्ष के राजकवि मयूर का सूर्य शतक, साम्य पुराण, अग्नि पुराण, ब्रहम पुराण आदि प्रमुख ग्रंथ हैं। भगवान सूर्य को ब्रहमा, परमात्मा, स्वंय-भू, अज, सर्वोत्तम सब का मूल कारण और संसार का उदगम माना जाता है। तंत्रशास्त्र में ( ) से सूर्य उपासना का ही अर्थ है।

वास्तव में सूर्य, यदि पृथ्वी पर न हो तब हमारा जीवन असम्भव हो जाता। पृथ्वी पर जीवन का आरम्भ लगभग ५० करोड़ साल पहले माना गया है। इतनी अवधि से अधिक समय से सूर्य तेज हमें देता चला आ रहा है। सूर्य से ही समस्त जगत प्रकाशित होता है और समस्त ग्रह सूर्य के ही प्रकाश से प्रतिबिम्बित होते हैं, कल्पना करें हमारा सूर्य नहीं होता तब हमारी पृथ्वी पर उत्तरी ध्रुव से जैसी सर्दी हो जावेगी, नदियां बहने बंद हो जायेगी और अंत में समुद्र भी जल में जम जावेगा। कोई वनस्पति भी नहीं होगी, सूर्य वास्तव में एक मानसून की तरह है जो अपनी ऊर्जा स्वंय पैदा करता है। सूर्य के अन्दर ऊर्जा का इतना अक्षुण भण्डार है जो अनंतकाल तक हमारी कल्पना से परे है, जो कभी समाप्त नहीं हो सकता। वास्तव में सूर्य एक विशाल परमाणु रियेक्टर की तरह है जिसमें परमाणु का विखंडन नहीं बल्कि मिलन होता है। इस समय पृथ्वी पर जो रियेक्टर बनाया गया है उनसे उसमें परमाणुओं का विण्डन होता है और उनसे ऊर्जा मिलती है लेकिन जिस तरह की ऊर्जा सूर्य से मिलती है वह रियेक्टर अभी बने नहीं हैं। पिछले दिनों जर्मनी ने एक नकली सूर्य बनाया तब उसको मात्र एक घंटे चलाने के लिए सारे यूरोप के देशों की 24 घंटे बिंजली बंद करनी पड़ी तब

कहीं ऐसा हो पाया लेकिन फिर भी सूर्य के बराबर उसमें उष्मा नहीं थी। सूर्य के अन्दर का ताप 1,50,00000 डिग्री सेन्टीग्रेड है। एक परमाणु बम के विस्फोट से इससे भी अधिक ताप उत्पन्न होता है।

इस काल में जब ऊर्जा की या विद्युत की, पेट्रोल की चारों तरफ मांग होने के कारण त्राहि-त्राहि मची हुई है। वैज्ञानिकों को लगता है यदि यह मांग बराबर इसी तरह ही जारी रही तो आनेवाले कुछ सैकड़ों वर्षों में ही ऊर्जा के परम्परागत स्रोत समाप्त हो जायेंगे लेकिन नहीं-सूर्य की सौर ऊर्जा का प्रयोग यदि हम करना सीख जायें तब अनन्तकाल तक हम उपभोग कर सकते हैं। महर्षि अरविन्द आश्रम पांडिचेरी एवं राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला नई दिल्ली, बिड़ला इन्स्टिट्यूट, मेसरा (रांची) ने महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां की हैं सेन्ट्रल इलैक्ट्रोनिक्स लिमिटेड, साहिबाबादवालों ने सौर ऊर्जा से चलित छोटे सेल, ट्रांजस्टिर के सेल, एवं गांव में प्रकाशित करने के लिए बत्तियां सड़कों की स्ट्रीट लाइट बनाई है जो कि राय बरेली और पूर्वी उत्तर प्रदेश के जिलों में देखने को मिल सकती है। एक साहिबाबाद में दर्शन के लिए एक सौर ऊर्जा से चलनेवाली कार भी रखी हुई है। सौर ऊर्जा में बैटरी में लगनेवाले कच्चा माल "सिलिकोन" इस समय कनाडा से आयात किया जाता है लेकिन अशुद्ध रूप में हिमालय पहाड़ पर तिब्बतवाले हिस्से के जमीन में विशाल भंण्डार है। यदि हमारी सरकार और विश्व की अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसियां मिलकर प्रयास करें **तो सारे**

विश्व की ऊर्जा की समस्या का अकेला भारत ही निबट सकता है।

इस सन्दर्भ में एक बात और बतलाई जाये कि अन्तरिक्ष में चलनेवाले उपग्रह अन्तरिक्ष यान सब सौर ऊर्जा से ही चलते हैं। अरब में एक ऐसा होटल भी बनाया गया है जो सूर्य ऊर्जा से चालू होकर तप्त रेगिस्तान में शीतल हवा और ठंडा जल प्रदान करेगा जो आधुनिक विज्ञान की एक चुनौती ही है, यदि ऐसा सम्भव हो गया तो लोग हिमालय पहाड़ पर नहीं अरब देशों में जाना ज्यादा पसंद करेंगे।

हमारा वैज्ञानिकों व नवयुवकों से व शोधकर्ताओं से एवं हमारे प्राचीन धर्मशास्त्रीयों से अनुरोध है उनके अपने धर्म में सूर्य के सम्बन्ध में जो जानकारी हो उसका आम जनमानस में प्रचार व प्रसार करें एवं जनकल्याण को "बहुजन हितायः बहुजन सुखायः" को ध्यान में रखकर कोई कार्य करें।

ओमप्रकाश गुप्ता
गुप्ता टाइप स्कूल, चन्दौसी